इन्वेंचरिंग सप्ताह

अनन्या रामगोपाल

जब मैंने पहली बार इन्वेंचर एकेडमी के हॉल में कदम रखा तो मैं बेहद घबराई हुई थी। एकदम नए शहर के बिलकुल नए स्कूल में नवीं कक्षा में दाखिला लेना किसी के लिए भी काफी तनावपूर्ण अनुभव हो सकता है। और फिर मैंने पहली बार अपनी कक्षा में प्रवेश किया, यह वही कक्षा थी जो जल्द ही मेरी पसन्दीदा जगह बनने वाली थी। यहाँ पर मैंने देखा कि बहुत सारे विद्यार्थी एक–दूसरे को घेरकर गपशप कर रहे थे और कैफीन पर मँडरा रहे छोटे बच्चों की तरह ऊँची आवाजें निकाल रहे थे। एक नई छात्रा के लिए इससे अधिक डरावना दृश्य नहीं हो सकता था। अब मैं उनके इलाके में थी और मुझे पता ही नहीं चल रहा था कि मुझे क्या करना चाहिए।

पर मेरे लिए यह सौभाग्य की बात थी कि इन्वेंचर अन्य स्कूलों की तरह नहीं है। यहाँ साल के शुरू में ही कामकाज शुरू नहीं कर दिया जाता। विद्यार्थियों को इस बात का पर्याप्त समय दिया जाता है कि वे अपने को स्कूल के वातावरण के अनुसार ढाल सकें बनिस्बत इसके कि उन्हें स्कूल की दिनचर्या में सीधे ही धकेल दिया जाए। इसके परिणाम स्वरूप "इन्वेंचरिंग" के विचार ने जन्म लिया, जिसके तहत विद्यार्थियों को कुछ मजेदार गतिविधियों के माध्यम से एक–दूसरे को जानने का अवसर दिया जाता है और इसके लिए आमतौर पर कला सम्बन्धी किसी बड़े प्रॉजेक्ट को हाथ में लिया जाता है। इस प्रॉजेक्ट के पीछे निहित विचार यह है कि विद्यार्थी अपने काम की प्रगति को देखें, आगे की योजना बनाएँ और अपने काम के पूरा होने के बाद मिलने वाली सन्तुष्टि को महसूस करें। विद्यार्थियों को सम्भावित विविध प्रॉजेक्टों की विस्तृत सूची दी जाती है, जिसमें से वे अपना पसन्दीदा प्रॉजेक्ट चुन सकते हैं। पिछले साल हमें जो विकल्प दिए गए थे वे इस प्रकार थे– चिड़ियों के लिए घर बनाना, भित्ति चित्र बनाना, बगीचे की सजावट करना आदि। मैंने चिड़ियों का घर बनाने वाला प्रॉजेक्ट चुना। मुझे दूसरे 10 बच्चों के समूह में रखा गया जिसमें अलग–अलग कक्षाओं के बच्चे थे और उन्हें भी मेरे प्रॉजेक्ट पर ही काम करना था। हालाँकि जब मैंने चिड़ियों के लिए घर बनाने का प्रॉजेक्ट चुना तो मुझे लगा था कि यह बहुत आसान होगा लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं था। वास्तव में हमें इसके लिए बहुत सारी योजना बनानी पड़ी कि कौन–कौन सी सामग्री चाहिए, डिजाइन कैसा होगा, किस विशेषज्ञ की राय लेनी होगी और किसकी मदद की जरूरत पड़ेगी। अपने प्रॉजेक्ट की कच्ची योजना बनाने के बाद हम उसे कार्यान्वित करने को तत्पर हुए। यहाँ हमें इस सच्चाई का एहसास हुआ कि चिड़ियों का घर बनाने के लिए की गई दुनिया भर की तैयारी भी काफी नहीं थी। इसके कारण सामने आने वाली समस्याओं को हल करने का हमारा कौशल प्रखर हुआ, हम असफल नहीं होना चाहते थे और इस कोशिश में हमें एहसास हुआ कि साथ में मिल–जुलकर काम करना, एक–दूसरे पर निर्भर होना और भरोसा करना कितना महत्त्वपूर्ण है। इस सबके बाद सप्ताह के अन्त में मानो एक चमत्कार हुआ और हम अपने पूर्ण रूप से निर्मित व सुन्दर चिड़ियों के घर को बड़ी प्रशंसापूर्ण नजरों से निहार रहे थे। लेकिन मैंने उस पूरे सप्ताह में केवल यही काम नहीं किया था बल्कि इस प्रक्रिया में अनजाने ही मैंने कई अच्छे दोस्त बना लिए थे और अब मैं अपने को एक अजनबी जैसा नहीं महसूस कर रही थी।

इन्वेंचरिंग सप्ताह का समापन कक्षा 4–10 के विद्यार्थियों के लिए शुक्रवार को स्लीपओवर से होता है। यह स्लीपओवर सदा ही इन्वेंचरिंग का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। एक नई छात्रा के रूप में मेरे लिए यह अनुभव अद्‌भुत था, क्योंकि मैंने नए लोगों को केवल हफ्ते भर के

लिए ही जाना था। यह अनुभव मेरी उम्मीदों से कहीं बढ़कर था और मैं चाहती थी कि यह अनुभव बार–बार हो। फिर चाहे वह सूरज के उगने तक गपशप करना हो या आधी रात तक आँगन में नाचना हो, इस इन्वेंचरिंग में सबके लिए कुछ न कुछ अवश्य था। अगले दिन जब मैं घर लौटी तो मुझे लगा कि मैं इन्वेंचर की ही सदस्या हूँ और मैं खुद को उसका हिस्सा समझने लगी।

वैसे तो मुझे लगता है कि समय के साथ–साथ इन्वेंचरिंग के बिना भी मैं स्कूल में दोस्त बना लेती। लेकिन उस एक हफ्ते में मुझे वह सब कुछ मिला जिसकी मुझे उस वक्त जरूरत थी। मुझमें आत्मविश्वास पैदा हुआ, काम को हाथ में लेने का जज्बा जागा और साथ ही मैंने समूह में काम करना भी सीखा। इसने मुझे रचनात्मक बनने और नवाचार करने को तो प्रोत्साहित किया ही, साथ ही खुद को चुनौती देने और इतने सालों में अर्जित किए कौशलों का उपयोग करना भी सिखाया। सबसे ज्यादा मजेदार बात तो यह थी कि मेरा समय बहुत अच्छी तरह से बीता और मैंने कुछ अच्छे दोस्त भी बनाए। इस पूरे अनुभव के लिए मैं सदा इन्वेंचर की आभारी रहूँगी। अब, एक साल के बाद भी मैं अपने इन्वेंचरिंग अनुभव को बहुत प्यार से याद करती हूँ।

अनन्या रामगोपाल इन्वेंचर एकेडमी, बेंगलूरु की छात्रा हैं। उनसे ananya.ramgopal@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

